सार्वभौम हिन्दी लेखक सारणी

द्वारका प्रसाद शास्त्री

सार्वभौम हिन्दी लेखक सारणी

द्वारका प्रसाद शास्त्री

सार्वभौम
हिन्दी लेखक सारणी

[UNIVERSAL HINDI AUTHOR TABLE]

⊙

द्वारकाप्रसाद शास्त्री

संग्रहाध्यक्ष

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

⊙

साहित्य भवन [प्रा.] लिमिटेड

इलाहाबाद-३

पृ. 32

मूल्य : ५.०० प्रथम संस्करण : १९७६

गिरीश टण्डन द्वारा साहित्य भवन (प्रा०) लिमिटेड, ९३ के० पी० कक्कड़ रोड़, इलाहाबाद के लिए प्रकाशित तथा सम्मेलन मुद्रणालय, प्रयाग द्वारा मुद्रित।

भूमिका

पुस्तकालयों में पुस्तकों की संख्या में निरन्तर वृद्धि होती रहती है। उनका वर्गीकरण विषयों के अनुसार करने पर भी प्रत्येक विषय में अनेक लेखकों की पुस्तकें आ जाती हैं। अतः एक लेखक का दूसरे लेखक से अलगाव करना आवश्यक हो जाता है। इसके लिए एक ऐसी लेखक सारणी की आवश्यकता पड़ती है, जिससे अलगाव किया जा सके। अंग्रेजी तथा अन्य कई भाषाओं में ऐसी सारणियाँ बनाई गई हैं।

राष्ट्रभाषा हिन्दी में इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए यह सारणी तैयार की गई है। अब हिन्दी में भारतीय तथा विदेशी भाषाओं से अनूदित हो कर पुस्तकें आ रही हैं। अतः यह आवश्यक है कि लेखक सारणी ऐसी हो, जिससे कि संसार की सभी भाषाओं के लेखकों का परस्पर अलगाव किया जा सके। इसलिए देवनागरी वर्णमाला में यह सारणी वैज्ञानिक विधि से बनाई गई है। इसका प्रयोग कई पुस्तकालयों में कर के देख लिया गया है। यह बहुत उपयोगी और सफल सिद्ध हुई है। इसकी विस्तारशीलता के लिए सामान्य विभाजन के रूप में कुछ सूत्र अपनाए गये हैं। अतः आकार में छोटी होते हुए भी इसमें अद्भुत क्षमता और ग्रहणशीलता आ गई है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि प्रत्येक पुस्तकालय के लिए यह उपयोगी सिद्ध होगी।

—**द्वारकाप्रसाद शास्त्री**
संग्रहाध्यक्ष

परिचय

यह लेखक सारिणी देवनागरी लिपि (Deva-Nagari Character) की वर्णमाला के आधार पर बनाई गई है। इस वर्णमाला में निम्नलिखित वर्ण या अक्षर होते हैं:—

स्वर (Vowel)

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ अं अः

व्यंजन (Consonant)

क ख ग घ ङ	कवर्ग
च छ ज झ ञ	चवर्ग
ट ठ ड ढ ण	टवर्ग
त थ द ध न	तवर्ग
प फ ब भ म	पवर्ग
य र ल व	अन्तःस्थ
श ष स ह	ऊष्म

अकारान्त व्यंजन

ऊपर 'क' 'ख' आदि व्यंजन अक्षरों में अ की ध्वनि मिली हुई (Inherent) होती है।

जैसे—क्+अ=क

ऐसे व्यंजन को **अकारान्त व्यंजन** कहते हैं।

हलन्त व्यंजन

जब क से ह तक के व्यंजन अक्षर अपने मूल रूप में रहते हैं तो उनको **हलन्त व्यंजन** कहते हैं।

जैसे—क् ख् ग् घ् आदि

मात्राओं (Medial) **का प्रयोग**

व्यंजन अक्षरों के साथ अ से अः तक के स्वर मिला कर लिखे जाते हैं। प्रत्येक की मात्रा निम्नलिखित रूप में होती है।

स्वर	मात्रा	व्यंजन के साथ
अ		क्+अ =क
आ	ा	क्+आ=का

इ	ि	क्+इ=कि
ई	ी	क्+ई =की
उ	ु	क्+उ =कु
ऊ	ू	क्+ऊ =कू
ऋ	ृ	क्+ऋ=कृ
ए	े	क्=ए =के
ऐ	ै	क्+ऐ =कै
ओ	ो	क्+ओ=को
औ	ौ	क्+औ=कौ
अं	ं	क+अं =कं
अः	ः	क+अः=कः

इनको **मात्रिक व्यंजन** कहा जाता है। इनको निम्नलिखित रूप में याद किया जाता है।

क का कि की कु कू कृ के कै को कौ कं कः

इनमें से ऋ की मात्रा का प्रयोग व्यावहारिक रूप में कुछ व्यंजनों के साथ नहीं होता क्योंकि वैसे शब्द प्रयोग में नहीं मिलते। जैसे––र आदि अक्षरों में।

अनुस्वार और विसर्ग (Nasal symbol and Symbol for final aspirate)

एक बिन्दी को अनुस्वार और दो बिन्दी : को विसर्ग कहा जाता है। विसर्ग का प्रयोग संस्कृत भाषा के शब्दों में विशेष रूप से होता है। जैसे––बालकः, दुःख आदि।

सानुस्वार वर्ण (Nasal letter)

अनुस्वार प्रत्येक स्वर और व्यंजन अक्षर के साथ लग सकता है। तब उसको सानुस्वार वर्ण कहते हैं। जैसे––

अं	अंगिरा
आं	आंध्र
इं	इंदिरा
कं	कंसल
कां	कांगड़ी
किं	किंकर
कुं	कुंभनदास

संयुक्ताक्षर (Compound Consonant)

जिस प्रकार हलन्त व्यंजन अक्षरों के साथ स्वर अक्षर की मात्राएँ मिलती

हैं उसी प्रकार हलन्त व्यंजन अक्षरों के साथ व्यंजन अक्षर भी मिलते हैं। तब इनको संयुक्ताक्षर कहते हैं। मुख्य संयुक्ताक्षर निम्नलिखित होते हैं:—

व्यंजन	संयुक्ताक्षर
क्	क्क, क्ख, क्च, क्ट, क्त, क्थ, क्प, क्म, क्य, क्र, क्ल, क्व, क्श, क्ष;
	क्ष्म, क्स, क्ह
ख्	ख्त, ख्य, ख्र, ख्व, ख्श, ख्स
ग्	ग्न, ग्र, ग्व
घ्	घ्न, घ्म, घ्र
च्	च्च, च्छ, च्म, च्य, च्व
छ्	छ्र
ज्	ज्ज, ज्ञ, ज्य, ज्र, ज्व
झ्	—
ट्	ट्ट, ट्ठ, ट्य, ट्र
ठ्	ठ्य
	ड्ड, ड्ढ
ढ्	ढ्य, ढ्र
ण्	ण्य, ण्व
त्	त्क, त्त, त्थ, त्न, त्प, त्फ, त्म, त्म्य, त्य, त्र, त्ल, त्व, त्श, त्स, त्ह
थ्	थ्य, थ्र, थ्व
द्	द्ग, द्द, द्ध, द्भ, द्म, द्य, द्र, द्व
ध्	ध्न, ध्म, ध्य, ध्र, ध्व
न्	न्न, न्प, न्म, न्य, न्व
प्	प्ट, प्त, प्प, प्म, प्य, प्र, प्ल, प्व
फ्	फ्फ
ब्	ब्ज, ब्द, ब्न, ब्ब, ब्भ, ब्य, ब्र, ब्ल
भ्	भ्य, भ्र, भ्व
म्	म्त, म्न, म्प, म्म, म्य, म्र, म्ल
य्	य्य
र्	र्क, र्ख, र्ग, र्घ, र्च, र्छ, र्ज, र्झ, र्ट, र्ठ, र्ड, र्ढ, र्ण, र्त, र्थ, र्द, र्ध, र्न, र्प,
	र्फ, र्ब, र्भ, र्म, र्य, र्र, र्ल, र्व, र्श, र्ष, र्स, र्ह
ल्	ल्क, ल्प, ल्फ, ल्म, ल्य, ल्व, ल्श, ल्ह
व	व्य, व्र
श्	श्क, श्च, श्न, श्म, श्य, श्र, श्ल, श्व, श्श
ष्	ष्क, ष्ट, ष्ठ, ष्ण, ष्प, ष्फ, ष्म, ष्य, ष्व, ष्ह
स्	स्क, स्ख, स्त, स्त्य, स्त्र, स्थ, स्प, स्फ, स्म, स्य, स्र, स्व
ह्	ह्न, ह्म, ह्य, ह्र, ह्ल, ह्व
क्ष त्र ज्ञ	

ऊपर के संयुक्ताक्षरों में क्ष, त्र और ज्ञ भी संयुक्ताक्षर हैं। वे इस प्रकार बनते हैं।

क्+ष=क्ष त्+र=त्र ज्+ञ=ज्ञ

इन तीनों का प्रयोग अन्य संयुक्ताक्षरों की अपेक्षा अधिक होता है। इसलिए इनको स्वतंत्र व्यंजन अक्षरों के समान माना गया है।

क्रमबद्धता

व्यंजनों और प्रमुख संयुक्त व्यंजन अक्षरों को यदि क्रमशः रखा जाय तो उनका क्रम निम्नलिखित होगा।

क	च्च	त्क	घ्य	म्भ	र्ब	श्व
क्क	च्छ	त्त	घ्र	म्त	र्भ	श्श
क्ख	च्म	त्थ	ध्व	म्न	र्म	ष
क्च	च्य	त्न	न	म्प	र्य	ष्क
क्ट	च्व	त्प	न्न	म्म	र्र	ष्ट
क्त	छ	त्फ	न्प	म्य	र्ल	ष्ठ
क्थ			न्म			
क्प	छ्र	त्म	न्य	म्र	र्व	ष्ण
क्म	ज	त्म्य	न्व	म्ल	र्श	ष्प
क्य	ज्ज	त्य	प	य	र्ष	ष्फ
क्र	ज्ञ	त्र	प्ट	य्य	र्स	ष्म
क्ल	ज्य	त्ल	प्त	र	र्ह	ष्य
क्व						
क्श	ज्र	त्व	प्प	र्क	ल	ष्व
क्ष	ज्व	त्श	प्म	र्ख	ल्क	ष्ह
क्ष्म	झ	त्स	प्य	र्ग	ल्प	स
क्स	झ्	त्ह	प्र	र्घ	ल्फ	स्क
क्ह	ट	थ	प्ल	र्च	ल्म	स्ख
ख	ट्ट	थ्य	प्व	र्छ		स्त
	ट्ठ					
ख्त	ट्य	थ्र	फ	र्ज	ल्य	स्त्य
ख्य	ट्र	थ्व	फ्फ	र्झ	ल्व	स्त्र
ख्र	ठ	द	ब	र्ट	ल्श	स्थ
					ल्ह	स्प
ख्व	ठ्य	द्ग	ब्ज	र्ठ	व	स्फ
ख्श	ड	द्द	ब्द	र्ड	व्य	स्म
ख्स			ब्न			
ग	ड्ड	द्ध	ब्ब	र्ढ	व्र	स्य
ग्न	ड्ढ	द्भ	ब्भ	र्ण	श	स्र
ग्र	ढ	द्म	ब्य	र्त	श्क	स्व
ग्व	ढ्य	द्य	ब्र	र्थ	श्च	ह
घ	ढ्र	द्र	ब्ल	र्द	श्न	ह्न
घ्न	ण	द्व	भ	र्ध	श्म	ह्म
घ्म	ण्य	ध	भ्य	र्न	श्य	ह्य
घ्र	ण्व	ध्न	भ्र	र्प	श्र	ह्र
च	त	ध्म	भ्व	र्फ	श्ल	ह्ल

संयुक्ताक्षर और मात्रायें

दो व्यंजनों के संयुक्त हो जाने पर वह स्वतंत्र व्यंजन अक्षर बन जाता है। इसके साथ स्वरों की मात्रायें लगाई जा सकती हैं।

जैसे—प्र प्रा प्रि प्री प्रु प्रू प्रे प्रै प्रो प्रौ

यही नियम दो से अधिक व्यंजनों के संयुक्त होने पर भी होता है। जैसे—त्स्य। मत्स्येंद्र

संयुक्ताक्षरों का प्रयोग

शब्दों में संयुक्ताक्षरों का प्रयोग आदि, मध्य और अंत तीनों स्थानों पर किया जाता है। जैसे:—

आदि में—प्रेम
मध्य में—विश्वेश्वर
अंत में—वैश्य

अनुस्वार और परसवर्ण

संस्कृत व्याकरण के अनुसार शब्दों में अनुस्वार को उसके आगे के अक्षर के वर्ग के पांचवें वर्ण के रूप में लिखा जाता है।

जैसे—गंगा = गङ्गा
पंच = पञ्च
पंत = पन्त
कंठ = कण्ठ
शंभु = शम्भु

इसको 'पंचमांत' भी कहते हैं। कुछ शब्दों पर यह नियम लागू नहीं होता। जैसे—अन्न, मम्मट आदि।

हिन्दी में परसवर्ण के रूप में शब्दों को नहीं लिखा जाता है। उनको अनुस्वार के रूप में ही लिखा जाता है। जैसे—गंगा, पंच, पंत, कंठ, शंभु।

अनुस्वार को वर्ग के पाँचवें वर्ण के रूप में लिखने के कारण यह पर अर्थात् आगे के वर्ण का समान वर्गीय वर्ण हो जाता है। इसलिए इसको पर-सवर्ण कहते हैं।

संस्कृत में जो शब्द अपवाद होते हैं उनको हिन्दी में भी वैसे ही लिखा जाता है। जैसे—अन्न, मम्मट आदि।

हिन्दी में उर्दू, फारसी और अंग्रेजी आदि भाषाओं से आये हुए शब्दों को उसी रूप में लिखा जाता है। उन पर अनुस्वार वाला नियम लागू नहीं होता।

जैसे—सन्नाह, हिम्मत, इन्कार आदि।

लेखक सारणी

पुस्तकालय में अनेक लेखकों की पुस्तकें संग्रह की जाती हैं। उनका विषय के आधार पर वर्गीकरण किया जाता है। एक विषय में भी अनेक लेखकों की पुस्तकें हो जाती हैं। उनका एक दूसरे से अलगाव करने के लिये लेखक सारणी या आधार टेबुल की आवश्यकता पड़ती है। हिन्दी भाषा की देवनागरी वर्णमाला के आधार पर बनाई गई यह लेखक सारणी संक्षिप्त होते हुए भी बहुत व्यापक है।

रूपरेखा

इस सारणी में स्वर और व्यंजन अक्षरों को निम्नलिखित अंकन (नोटेशन) लगाकर १०० भागों में विभाजित किया गया है।

०० स्वर अ से औ तक

क आदि व्यंजन अक्षरों को ३ वर्गों में विभाजित किया गया है।

व्यंजन अकारान्त		व्यंजन आ से औ तक		हलन्त व्यंजन	
क	०१	का	०२	क्	०३
क्ष	०४	क्षा	०५	क्ष्	०६
ख	०७	खा	०८	ख्	०९
ग	१०	गा	११	ग्	१२
घ	१३	घा	१४	घ्	१५
च	१६	चा	१७	च्	१८
छ	१९	छा	२०	——	
ज	२१	जा	२२	ज्	२३
ज्ञ	२४	ज्ञा	२५	ज्ञ्	२६
झ	२७	झा	२८	–	
ट	२९	टा	३०	ट्	३१
ठ	३२	ठा	३३	ठ्	३४
ड	३५	डा	३६	ड्	३७
ढ	३८	ढा	३९	–	
ण	४०	णा	४१	ण्	४२
त	४३	ता	४४	त्	४५
त्र	४६	त्रा	४७	त्र्	४८
थ	४९	था	५०	थ	५१
द	५२	दा	५३	द्	५४
ध	५५	धा	५६	ध्	५७
न	५८	ना	५९	न्	६०
प	६१	पा	६२	प्	६३
फ	६४	फा	६५	फ्	६६
ब	६७	बा	६८	ब्	६९
भ	७०	भा	७१	भ्	७२
म	७३	मा	७४	म्	७५
य	७६	या	७७	य्	७८
र	७९	रा	८०	र्	८१
ल	८२	ला	८३	ल्	८४
व	८५	वा	८६	व्	८७
श	८८	शा	८९	श्	९०
ष	९१	षा	९२	ष्	९३
स	९४	सा	९५	स्	९६
ह	९७	हा	९८	ह्	९९

विस्तार

विस्तारशीलता की दृष्टि से इस सारणी को ३ अंकों में कर दिया गया है। इस प्रकार ०० से ९९ अंकों की यह सारणी ००० से ९९९ तक विस्तृत हो गई है। इसका पूर्ण विस्तार आगे दिया गया है।

(१) अकारान्त व्यंजन अक्षरों का विस्तार ९ अंकों में किया गया है। जैसे—

कं	०१०	अनुस्वार
क	०११	अकारान्त व्यंजन (हलन्त व्यंजन+अ)
कअ	०१२	अकारान्त व्यंजन + स्वर अक्षर अ से औ तक
कक	०१३	अकारान्त व्यंजन + कवर्ग (क ख ग घ)
कच	०१४	अकारान्त व्यंजन + चवर्ग (च छ ज झ)
कट	०१५	अकारान्त व्यंजन + टवर्ग (ट ठ ड ढ ण)
कत	०१६	अकारान्त व्यंजन + तवर्ग (त थ द ध न)
कप	०१७	अकारान्त व्यंजन + पवर्ग (प फ ब भ म)
कय	०१८	अकारान्त व्यंजन + अंतःस्थ (य र ल व)
कश	०१९	अकारान्त व्यंजन + ऊष्म (श ष स ह)

इसमें अ स्वर, क कवर्ग (क ख ग घ), च चवर्ग (च छ ज झ), ट टवर्ग (ट ठ ड ढ ण), त तवर्ग (त थ द ध न), प पवर्ग (प फ ब भ म), य अंतःस्थ (य र ल व), और श ऊष्म (श ष स ह) के प्रतीक अक्षर हैं। अर्थात् क के बाद जो अक्षर आवेगा, वह जिस वर्ग में पड़ेगा वही अंक लगाया जायगा।

(२) अ से औ तक की मात्राओं से युक्त व्यंजन का विस्तार भी ९ में किया गया है।

जैसे—

का	०२०	आ	ा
कि	०२१	इ	ि
की	०२२	ई	ी
कु	२३	उ	ु
कू	०२४	ऊ	ू
कृ	०२५	ऋ	ृ
के	०२६	ए	े
कै	०२७	ऐ	ै
को	०२८	ओ	ो
कौ	०२९	औ	ौ

(३) हलन्त व्यंजन अक्षरों का विस्तार भी ९ वर्गों में किया गया है।

क्क	०३०	हलन्त व्यंजन + कवर्ग (क ख ग घ)
क्च	०३१	हलन्त व्यंजन + चवर्ग (च छ ज झ)
क्ट	०३२	हलन्त व्यंजन + टवर्ग (ट ठ ड ढ ण)
क्त	०३३	हलन्त व्यंजन + तवर्ग (त थ द ध न)
क्प	०३४	हलन्त व्यंजन + पवर्ग (प फ ब भ म)
क्य	०३५	हलन्त व्यंजन + य
क्र	०३६	हलन्त व्यंजन + र
क्ल	०३७	हलन्त व्यंजन + ल व
क्श	०३८	हलन्त व्यंजन + श ष
क्स	०३९	हलन्त व्यंजन + स ह

जिन हलन्त व्यंजन अक्षरों के साथ संयुक्ताक्षर नहीं के बराबर मिलते हैं उनको छोड़ दिया गया है। मात्रिक औ व्यंजन के साथ ही इनको रखने का विधान किया गया है।

जैसे—छ्‌ा, छ = २०९

सारणी की उपयोग विधि

नियम

(१) पुस्तक के लेखक का निर्णय सूचीकरण संहिता के नियमों के अनुसार करने के बाद उसके प्रथम अक्षर को ज्यों का त्यों लिखना चाहिए।

जैसे—

आनंद = आ
कंसल = कं
कालिदास = का
केशव = के
ज्ञानप्रकाश = ज्ञा
प्रेमचंद = प्रे

(२) जिन नामों में प्रथम अक्षर के बाद संस्कृत व्याकरण के अनुसार ङ, ञ्, ण्, न् और म् परसवर्ण (वर्ग का पंचमान्त अक्षर) करके लिखे गये हों, उनको अनुस्वार बना कर प्रथम अक्षर पर लिखना चाहिये।

जैसे—

१. गङ्गा = गं
२. चञ्चल = चं
३. कण्ठ = कं
४. पन्त = पं
५. सम्पूर्णानन्द = सं

(३) नामों के जिन शब्दों में व्याकरण के अनुसार न् और म् परसवर्ण होने पर भी अनुस्वार नहीं बनाये जा सकते, उनके प्रथम अक्षर को अनुस्वार न बना कर ज्यों का त्यों लिखना चाहिये।

जैसे—

वाङ्मय	=	वा
चिन्मय	=	चि
मृण्मय	=	मृ
अन्न	=	अ

इसी प्रकार हिम्मत, हम्मीर, मम्मट, कन्नोमल आदि।

(४) प्रथम अक्षर के बाद द्वितीय अक्षर यदि अकारान्त व्यंजन हो (जैसे— क ख ग घ आदि) और इसके बाद कोई अक्षर न हो तो उसी द्वितीय अक्षर का प्रतीक अंक (नम्बर) लगाना चाहिये।

जैसे—

भास	=	भा	९४१
माघ	=	मा	१३१
देव	=	दे	८५१

(५) यदि द्वितीय अक्षर अकारान्त व्यंजन हो और उसके बाद अन्य अक्षर भी हों तो तृतीय अक्षर जिस वर्ग (स्वर, कवर्ग, चवर्ग आदि) का हो उस वर्ग का अंक लगाना चाहिये।

जैसे—

आलम	=	आ	८२७
जयदेव	=	ज	७६६
यशपाल	=	य	८८७

वर्गों के सूचक प्रथम अक्षर प्रत्येक अकारान्त व्यंजन के साथ लगा दिये गये हैं।

(६) यदि द्वितीय अक्षर में आ से औ तक में से कोई मात्रा लगी हो तो उसका अंक लगाना चाहिये।

जैसे—

कालिदास	=	का	८३१
कबीर	=	क	६८२

(७) यदि द्वितीय अक्षर हलन्त व्यंजन हो तो उससे मिला हुआ तीसरा संयुक्त अक्षर जहाँ पर पड़ता हो उस वर्ग का अंक डालना चाहिये।

जैसे—

गुप्त	=	गु	६३३
शुक्ल	=	शु	०३७
वैश्य	=	वै	९०५

(८) यदि ठीक संयुक्त अक्षर का अंक न मिले तो उसके तृतीय अक्षर के वर्ग में रख देना चाहिये।

जैसे—

गर्ग = ग ८१०
कृष्ण = कृ ९३२
शर्मा = श ८१४

(९) यदि द्वितीय अक्षर सानुस्वार स्वर या मात्रिक व्यंजन हो तो उसके लेखक अंक को रेखांकित कर देना चाहिए और व्यवस्थापन क्रम में सम्बन्धित साधारण स्वर, व्यंजन और मात्रिक व्यंजन से पहले रखना चाहिए।

जैसे—

गोइंदी = गो ००२	सुधांशु = सु ५६०	हिमांशु = हि ७४०
गोइ = गो ००२	सुधाकर = सु ५६०	हिमानी = हि ७४०

(१०) तृतीय अक्षर चाहे स्वर हो, व्यंजन हो, सानुस्वार व्यंजन हो, मात्रिक व्यंजन हो, सब को सम्बद्ध अंक दे कर ही रखना चाहिए।

जैसे—

रामकुँवर = रा ७३३
रामकुमार = रा ७३३
रामकृपाल = रा ७३३
रामकौशल = रा ७३३

अलगाव की आवश्यकता पड़ने पर क्रामक संख्या में नीचे संकेत किया जा सकता है।

जैसे—

रामकुमार = रा ७३३
कु

अलगाव के ऐसे अवसर बहुत कम आते हैं।

व्यवस्थापन के नियम

(१) स्वर अक्षरों में अं को सब से पहले रखा जाय। उसके बाद अ से औ तक क्रमशः रखा जाय।

जैसे—अंश
अमर
इष्ट
ईश आदि

(२) व्यंजन अक्षरों को सारणी में दिये गये क्रम के अनुसार रखा जाय।
जैसे—

कंसल	=	कं	९४८
कपिल	=	क	६२१
कालिदास	=	का	८३१
किशोर	=	कि	८९८
कीथ	=	की	४९१
कुंभनदास	=	कुं	७०६
कुतबन	=	कु	४३७
कूर्म	=	कू	८१४
कृष्ण	=	कृ	९३२
केशव	=	के	८८८
कैसर	=	कै	९४८
कोकिल	=	को	०२१
कौहली	=	कौ	९७८
क्षत्रिय	=	क्ष	४७१

(३) अनुस्वार, चन्द्रबिन्दु और विसर्ग इन तीनों को एक ही क्रम में रखा जाय। उनमें आगे-पीछे रखने के लिये उनके साथ के अन्य अक्षरों का क्रम देखा जाय। जैसे—

अँगुली
अंगूर
अयंत्रित
अयःशूल

(४) ड़ को ड के साथ और ढ़ को ढ के साथ रखा जाय।

जैसे—

अडिग
अड़िया
आढ़त
आढ्य

(५) अनुस्वार और चंद्रबिन्दु सभी अक्षरों और मात्राओं के साथ आ सकते हैं। वे सदा स्वसम्बन्धित मात्रा से पहले रखे जायँ।

जैसे—

किंकर, किचलू।

जैसे—

कंसल	=	कं	९४८
कपूर	=	क	६२४

व्यवस्थापन

(एक अक्षर के अन्तर्गत व्यवस्थापन)

सामान्य व्यवस्थापन

अकबर	अ	०१७	कबीर	क	६८२
अखौरी	अ	०८९	काक	का	०११
अग्निहोत्री	अ	१२३	कात्यायन	का	४५९
अग्रवाल	अ	१२६	कालिदास	का	८३१
अनीस	अ	५९२	कालेलकर	का	८३६
अन्नपूर्णानंद	अ	६०३	कुतबन	कु	४३७
अवस्थी	अ	८५९	कृपाराम	कृ	६२०
अश्क	अ	९००	कृष्ण	कृ	९३१
अश्वघोष	अ	९०७	केडिया	के	३६१
आचार्य	आ	१७०	केशव	के	८८८
आलम	आ	८२७	कोशल	को	८८८
इंद्र	इं	५४६	कौशिक	कौ	८९१
इंशा	इं	८९०	खत्री	ख	४७२
इम्तियाज	इ	७५३	खन्ना	ख	६०३
ईश्वर	ई	९०७	खरे	ख	८०६
उत्पल	उ	४५७	खाडिलकर	ख	३६१
उपाध्याय	उ	६२०	खान	खा	५८१
उसमान	उ	९४७	खुमान	खु	७४०
ऊषा	ऊ	९२०	गंग	गं	१०६
ऋषिनाथ	ऋ	९२१	गंगाधर	गं	११०
एकनाथ	ए	०१६	गर्ग	ग	८१०
ऐतरेय	ऐ	४३८	गर्दे	ग	८१३
ओंकार	ओं	०२०	गहमरी	ग	९७७
ओझा	ओ	२८०	गांधी	गां	५६२
औदीच्य	औ	५३२	गायकवाड	गा	७६३
कंसल	कं	९४८	गिरिधरदास	गि	८०१
कपूर	क	६२४	गुप्त	गु	६३३

गुरु	गु	८०३	जैन	जै	५८१
गुलाबराय	गु	८३०	जैनेन्द्र	जै	५९६
गुलेरी	गु	८३६	जैमिनि	जै	७४१
गोकुलनाथ	गो	०२३	जोशी	जो	८९२
गोपाल	गो	६२०	ज्ञानेश्वर	ज्ञा	५९६
गोयल	गो	७६८	झवेरभाई	झ	६८६
गोरखनाथ	गो	७९३	टाटिया	टा	३०१
गोस्वामी	गो	९६७	टाल्स्टाय	टा	८४९
गौड़	गौ	३५१	टोडरमल	टो	३५८
गौतम	गौ	४३७	ठाकुर	ठा	०२३
ग्रियर्सन	ग्रि	७६८	डबराल	ड	६७८
ग्वाल	ग्वा	८२१	डिकिंसन	डि	०२१
घनानंद	घ	५९०	ढुंढिराज	ढुं	३९१
घिल्डियाल	घि	८४२	तिलक	ति	८२३
घोष	घो	९११	तिवारी	ति	८६०
चंदबरदाई	चं	५२७	तुलसी	तु	८२९
चतुर्वेदी	च	४४३	तोषनिधि	तो	९१६
चमूपति	च	७४५	त्रिपाठी	त्रि	६२०
चर्चिल	च	८११	त्रिवेदी	त्रि	८६६
चिंतामणि	चिं	४४०	थान	था	५८१
चौधरी	चौ	५५८	थामस	था	७३९
चौहान	चौ	९८०	दंडी	दं	३६२
छत्र	छ	४६१	दत्त	द	४५३
छागला	छा	१०८	दरिया साहब	द	८०१
छीहल	छी	९७८	दाऊद	दा	००५
जटमल	ज	२९७	दादूदयाल	दा	५३४
जयदेव	ज	७६६	दिवाकर	दि	८६०
जयप्रकाश	ज	७६७	दुबे	दु	६८६
जयशंकर	ज	७६९	दूलह	दू	८२९
जहूरबख्श	ज	९८४	देव	दे	८५१
जायस	जा	७६९	दौलतराम	दौ	८२६
जिज्जा	जि	२३३	द्विजदेव	द्वि	२१६

यशपाल	य	८८७	वृंद	वृं	५२१
यशोदा	य	८९८	व्यास	व्या	९४१
यादव	या	५२८	शंकर	शं	०१८
रंगनाथन	रं	१०६	शर्मा	श	८१४
रघुनाथ	र	१४३	शास्त्री	शा	९६३
रत्न	र	४५६	शिवपूजन	शि	८५७
रसखान	र	९४३	शीलमणि	शी	८२७
राकेश	रा	०२६	शुक्ल	शु	०३७
राठौर	रा	३३९	श्याम	श्या	७३१
राधाकृष्ण	रा	५६०	श्रीनिवास	श्री	५९१
रामानंद	रा	७४०	श्रीप्रकाश	श्री	६३६
राय	रा	७६१	श्रीवास्तव	श्रीं	८६०
राव	रा	८५१	संपूर्णानंद	सं	६२४
रावत	रा	८५६	सक्सेना	स	०६८
रैदास	रै	५३०	सत्येंद्र	स	४५९
लछिराम	ल	२०१	सदासुख	स	५३०
लल्लूलाल	ल	८४७	सप्रे	स	६३६
लाल	ला	८२१	सरदार	स	७९६
लाला	ला	८३०	सरस्वती	स	७९९
लेखराम	ले	०७८	सहगल	स	९७३
लोढ़ा	लो	३९०	सांकृत्यायन	सां	०२५
वर्मा	व	८१४	सान्याल	सा	६०५
वाजपेयी	वा	२१७	सारस्वत	सा	७९९
वाल्मीकि	वा	८४४	सावरकर	सा	८५८
विजयेंद्र	जि	२१८	सिंह	सिं	९७१
विट्ठल	वि	३१२	सिंहल	सिं	९७८
विद्यापति	वि	५४५	सिनहा	सि	५८९
विनय	वि	५८८	सुंदरदास	सुं	५२८
वियोगी	वि	७७८	सुकुल	सु	०२३
विश्वंभर	वि	९०७	सुदर्शन	सु	५२८
विश्वनाथ	वि	९०७	सुधा	सु	५६०
विष्णुप्रभाकर	वि	९३२	सुमन	सु	७३६

सूरदास	सू	७९६	सोमनाथ	सो	७३६
सेठ	से	३२१	स्वामी	स्वा	७४२
सेन	से	५८१	हरिश्चंद्र	ह	८०१
सेनापति	से	५९०	हृदयनाथ	हृ	५२८
सेवक	से	८५३	हेमचंद	हे	७३४

पुस्तक नाम

(१) लेखक अंग लगाने के बाद पुस्तक के नाम का प्रथम अक्षर इसके साथ लिख देना चाहिए। अंग्रेजी के पुस्तक नामों में लगे हुए A, Am, The आर्टिकिल को तथा हिन्दी पुस्तक नामों में लगे हुए अथ, श्री, श्री मद् आदि आदरसूचक शब्दों को छोड़ देना चाहिए।

जैसे—श्रीमद्भगवद्गीता = भगवद्गीता

(२) यदि हिन्दी के पुस्तक नामों में प्रथम अक्षर मात्रिक हो और उस अक्षर से प्रारंभ होनेवाली अन्य पुस्तकें भी हों तो प्रथम अक्षर को मात्रिक लिखना चाहिए।

जैसे—

प्रेमचंद	गबन	=	प्रे	७३४	ग
प्रेमचंद	गोदान	=	प्रे	७३४	गो

इस प्रकार पुस्तकों का भी परस्पर अलगाव हो जायगा।

(३) यदि एक ही विषय में या रूप (Form) में एक ही उपाधि या वंश नाम के लेखक आ जाँय तो उनका अलगाव व्यक्ति वाचक नाम के प्रथम अक्षर से किया जाना चाहिए।

जैसे—

हिन्दी काव्य

वर्मा, महादेवी	दीपशिखा	=	व	८१४	द
वर्मा, रामकुमार	एकलव्य	=	व	८१४	ए

इनकी क्रामक संख्या Call Number को इस प्रकार लिखना चाहिए।

८९१.४३१	८९१.४३१
व ८१४ द	व ८१४ द
म	रा

(४) उपाधि या वंश नाम रहित व्यक्तिवाचक नामों के तृतीय अक्षर एक

वर्ग के होने पर उनका भी अलगाव आवश्यकता पड़ने पर तृतीय अक्षर से किया जा सकता है।

जैसे—

रामअवध	रामइकबाल	रामदेव	रामधन
रा ७३२	रा ७३२	रा ७३६	रा ७३६
अ	इ	द	ध

इसी प्रकार का अलगाव एक तृतीय वर्ण जब मात्रिक हो तब भी किया जा सकता है।

जैसे—

रामदत्त = रा ७३६
द

रामदास = रा ७३६
दा

रामदेस = रा ७३६
दे

किन्तु ऐसे अवसर बहुत कम आते हैं।

प्रतियाँ

लेखक अंक लगाने और पुस्तक का प्रथम अक्षर लिखने के बाद यदि उस पुस्तक की कई प्रतियाँ हो तो उनमें अलगाव के लिए प्रथम पुस्तक में प्रति सूचक कोई अंक न लगाना चाहिए।

जैसे—

प्रेमचंद : रंगभूमि = प्रे ७३४ र

उसके बाद कोलन चिन्ह : लगाकर क्रमशः १, २, ३ आदि अंक लगाना चाहिए।

जैसे—

प्रेमचंद : रंगभूमि प्रे ७३४ र : १
प्रे ७३४ र : २
प्रे ७३४ र : ३ आदि

भाग

यदि पुस्तक कई भागों में हो तो पुस्तक नाम के प्रथम अक्षर के बाद डैश— लगा कर भाग सूचक १, २, ३ आदि अंक लिखना चाहिए।

जैसे—

प्रेमचंद : रंगभूमि प्रथम भाग प्रे ७३४ र–१

प्रेमचंद : रंगभूमि द्वितीय भाग प्रे ७३४ र–२

प्रतियाँ और भाग

यदि पुस्तक कई भागों में हो और उसकी कई प्रतियाँ भी हों तो पहले भाग सूचक अंक लगाकर तब प्रति सूचक अंक लगाना चाहिए।

जैसे—

प्रेमचंद : रंगभूमि प्रथम भाग प्रथम पुस्तक प्रे ७३४ र–१

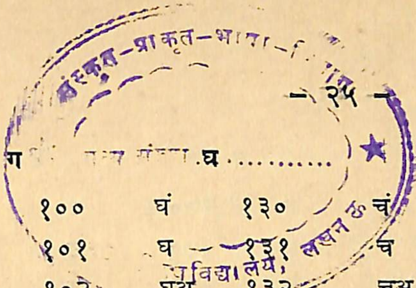
प्रेमचंद : रंगभूमि प्रथम भाग की प्रथम प्रति प्रे ७३४ र–१ : १

स्मरण रखना चाहिए कि पुस्तकालय में प्रत्येक पुस्तक मूल पुस्तक मानी जाती है। उसके बाद आने वाली वही पुस्तक उसकी प्रति (Copy) मानी जाती है और उस पर प्रति का सूचक अंक लगाया जाता है।

———

सारणी

स्वर अक्षर		क		क्ष		ख	
अं	०००	कं	०१०	क्षं	०४०	खं	०७०
अ	०००	क	०११	क्ष	०४१	ख	०७१
आ	००१	कअ	०१२	क्षअ	०४२	खअ	०७२
इ	००२	कक	०१३	क्षक	०४३	खक	०७३
ई	००३	कच	०१४	क्षच	०४४	खच	०७४
उ	००४	कट	०१५	क्षट	०४५	खट	०७५
ऊ	००५	कत	०१६	क्षत	०४६	खत	०७६
ऋ	००६	कप	०१७	क्षप	०४७	खप	०७७
ए	००६	कय	०१८	क्षय	०४८	खय	०७८
ऐ	००७	कश	०१९	क्षश	०४९	खश	०७९
ओ	००८						
औ	००९	का	०२०	क्षा	०५०	खा	०८०
		कि	०२१	क्षि	०५१	खि	०८१
		की	०२२	क्षी	०५२	खी	०८२
		कु	०२३	क्षु	०५३	खु	०८३
		कू	०२४	क्षू	०५४	खू	०८४
		कृ	०२५	क्षृ	०५५	खृ	०८५
		के	०२६	क्षे	०५६	खे	०८६
		कै	०२७	क्षै	०५७	खै	०८७
		को	०२८	क्षो	०५८	खो	०८८
		कौ	०२९	क्षौ	०५९	खौ	०८९
		क्क	०३०	क्ष्क	०६०	ख्क	०९०
		क्च	०३१	क्ष्च	०६१	ख्च	०९१
		क्ट	०३२	क्ष्ट	०६२	ख्ट	०९२
		क्त	०३३	क्ष्त	०६३	ख्त	०९३
		क्प	०३४	क्ष्प	०६४	ख्प	०९४
		क्य	०३५	क्ष्म	०६५	ख्य	०९५
		क्र	०३६	क्ष्मि	०६६	ख्र	०९६
		क्ल	०३७	क्ष्य	०६७	ख्ल	०९७
		क्श	०३८	क्स	०६८	ख्श	०९८
		क्श्	०३९	क्ह	०६९	ख्स	०९९



ग		घ		च		छ	
गं	१००	घं	१३०	चं	१६०	छं	१९०
ग	१०१	घ	१३१	च	१६१	छ	१९१
गअ	१०२	घअ	१३२	चअ	१६२	छअ	१९२
गक	१०३	घक	१३३	चक	१६३	छक	१९३
गच	१०४	घच	१३४	चच	१६४	छच	१९४
गट	१०५	घट	१३५	चट	१६५	छट	१९५
गत	१०६	घत	१३६	चत	१६६	छत	१९६
गप	१०७	घप	१३७	चप	१६७	छप	१९७
गय	१०८	घय	१३८	चय	१६८	छय	१९८
गश	१०९	घश	१३९	चश	१६९	छश	१९९
गा	११०	घा	१४०	चा	१७०	छा	२००
गि	१११	घि	१४१	चि	१७१	छि	२०१
गी	११२	घी	१४२	ची	१७२	छी	२०२
गु	११३	घु	१४३	चु	१७३	छु	२०३
गू	११४	घू	१४४	चू	१७४	छू	२०४
गृ	११५	घृ	१४५	चृ	१७५	छृ	२०५
गे	११६	घे	१४६	चे	१७६	छे	२०६
गै	११७	घै	१४७	चै	१७७	छै	२०७
गो	११८	घो	१४८	चो	१७८	छो	२०८
गौ	११९	घौ	१४९	चौ	१७९	छौ, छ्	२०९
ग्क	१२०	घ्क	१५०	च्क	१८०		
ग्च	२११	घ्च	१५१	च्च	१८१		
ग्ट	१२२	घ्ट	१५२	च्ट	१८२		
ग्त	१२३	घ्त	१५३	च्त	१८३		
ग्प	१२४	घ्प	१५४	च्प	१८४		
ग्य	१२५	घ्य	१५५	च्य	१८५		
ग्र	१२६	घ्र	१५६	च्र	१८६		
ग्ल	१२७	घ्ल	१५७	च्ल	१८७		
ग्श	१२८	घ्श	१५८	च्श	१८८		
ग्स	१३९	घ्स	१५९	च्स	१८९		

ज		ज्ञ		झ		ट	
जं	२१०	ज्ञं	२४०	झं	२७०	टं	२९०
ज	२११	ज्ञ	२४१	झ	२७१	ट	२९१
जअ	२१२	ज्ञअ	२४२	झअ	२७२	टअ	२९२
जक	२१३	ज्ञक	२४३	झक	२७३	टक	२९३
जच	२१४	ज्ञच	२४४	झच	२७४	टच	२९४
जट	२१५	ज्ञट	२४५	झट	२७५	टट	२९५
जत	२१६	ज्ञत	२४६	झत	२७६	टत	२९६
जप	२१७	ज्ञप	२४७	झप	२७७	टप	२९७
जय	२१८	ज्ञय	२४८	झय	२७८	टय	२९८
जश	२१९	ज्ञश	२४९	झश	२७९	टश	२९९
जा	२२०	ज्ञा	२५०	झा	२८०	टा	३००
जि	२२१	ज्ञि	२५१	झि	२८१	टि	३०१
जी	२२२	ज्ञी	२५२	झी	२८२	टी	३०२
जु	२२३	ज्ञु	२५३	झु	२८३	टु	३०३
जू	२२४	ज्ञू	२५४	झू	२८४	टू	३०४
जृ	२२५	ज्ञृ	२५५	झृ	२८५	टृ	३०५
जे	२२६	ज्ञे	२५६	झे	२८६	टे	३०६
जै	२२७	ज्ञै	२५७	झै	२८७	टै	३०७
जो	२२८	ज्ञो	२५८	झो	२८८	टो	३०८
		ज्ञौ	२५९	झौ, झ	२८९	टौ	३०९
ङ्क	२३०	ज्ञ्	२६०			ट्क	३१०
ज्च	२३१	ज्क	२६१			ट्च	३११
ज्छ	२३२	ज्त	२६२			ट्ट	३१२
ज्ज	२३३	ज्प	२६३			ट्त	३१३
ज्जन	२३४	ज्य	२६४			ट्प	३१४
ज्जव	२३५	ज्र	२६५			ट्य	३१५
ज्जा	२३६	ज्ल	२६६			ट्र	३१६
ज्जि	२३७	ज्व	२६७			ट्ल	३१७
ज्जे	२३८	ज्श	२६८			ट्श	३१८
ज्झ	२३९	ज्स	२६९			ट्स	३१९

ठ		ड		ढ		ण	
ठं	३२०	डं	३५०	ढं	३८०	णं	४००
ठ	३२१	ड	३५१	ढ	३८१	ण	४०१
ठअ	३२२	डअ	३५२	ढअ	३८२	णअ	४०२
ठक	३२३	डक	३५३	ढक	३८३	णक	४०३
ठच	३२४	डच	३५४	ढच	३८४	णच	४०४
ठट	३२५	डट	३५५	ढट	३८५	णट	४०५
ठत	३२६	डत	३५६	ढत	३८६	णत	४०६
ठप	३२७	डप	३५७	ढप	३८७	णप	४०७
ठय	३२८	डय	३५८	ढय	३८८	णय	४०८
ठश	३२९	डश	३५९	ढश	३८९	णश	४०९
ठा	३३०	डा	३६०	ढा	३९०	णा	४१०
ठि	३३१	डि	३६१	ढि	३९१	णि	४११
ठी	३३२	डी	३६२	ढी	३९२	णी	४१२
ठु	३३३	डु	३६३	ढु	३९३	णु	४१३
ठू	३३४	डू	३६४	ढू	३९४	णू	४१४
ठृ	३३५	डृ	३६५	ढृ	३९५	णृ	४१५
ठे	३३६	डे	३६६	ढे	३९६	णे	४१६
ठै	३३७	डै	३६७	ढै	३९७	णै	४१७
ठो	३३८	डो	३६८	ढो	३९८	णो	४१८
ठौ	३३९	डौ	३६९	ढौ, ढ्	३९९	णौ	४१९
ठ्क	३४०	ड्क	३७०			ण्क	४२०
ठ्च	३४१	ड्च	३७१			ण्च	४२१
ठ्ट	३४२	ड्ट	३७२			ण्ट	४२२
ठ्त	३४३	ड्त	३७३			ण्त	४२३
ठ्प	३४४	ड्प	३७४			ण्प	४२४
ठ्य	३४५	ड्य	३७५			ण्य	४२५
ठ्	३४६	ड्र	३७६			ण्र	४२६
ठ्ल	३४७	ड्ल	३७७			ण्ल	४२७
ठ्श	३४८	ड्श	३७८			ण्श	४२८
ठ्स	३४९	ड्स	३७९			ण्ह	४२९

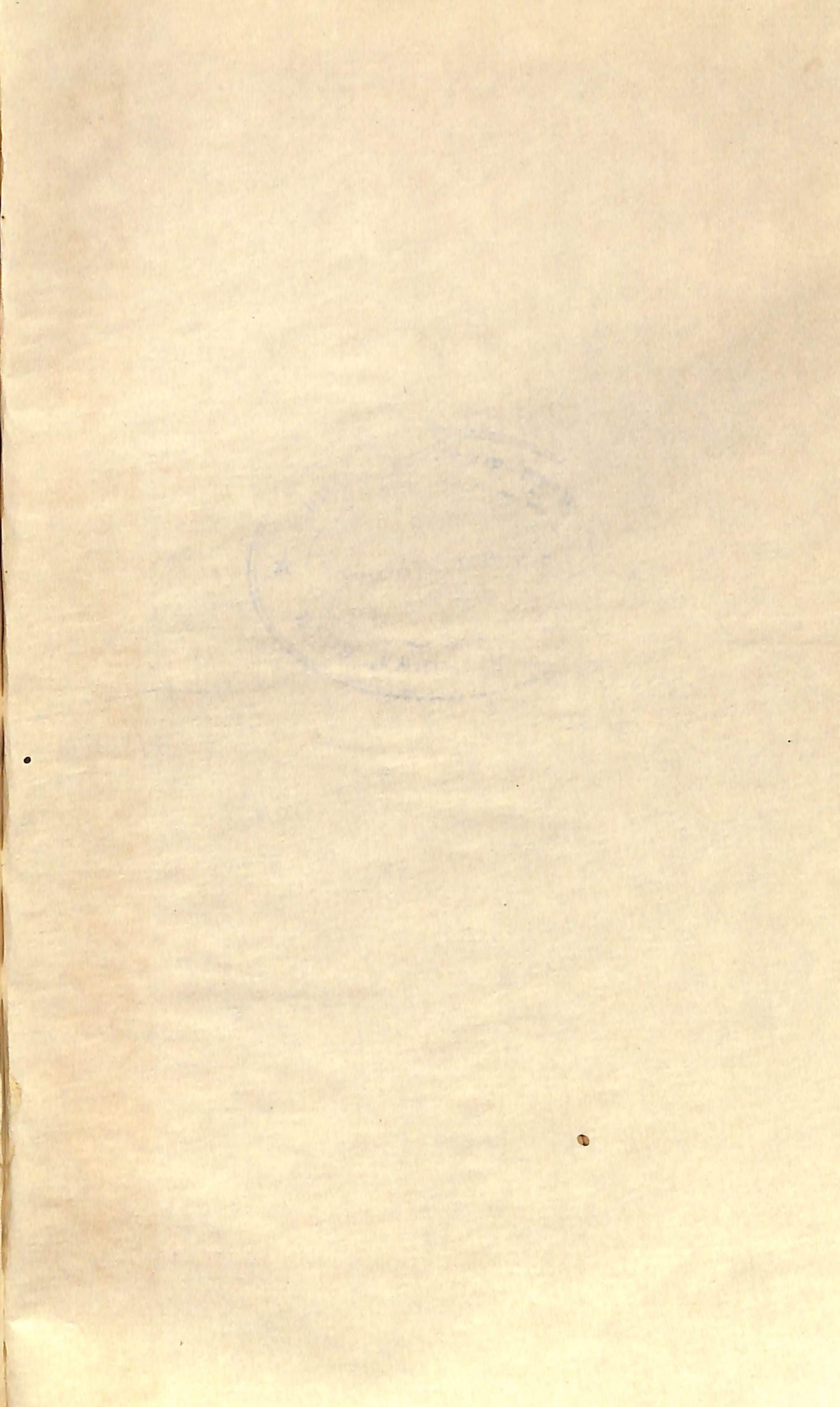
त		त्र		थ		द	
त	४३०	त्रं	४६०	थं	४९०	दं	५२०
त	४३१	त्र	४६१	थ	४९१	द	५२१
तअ	४३२	त्रअ	४६२	थअ	४९२	दअ	५२२
तक	४३३	त्रक	४६३	थक	४९३	दक	५२३
तच	४३४	त्रच	४६४	थच	४९४	दच	५२४
तट	४३५	त्रट	४६५	थट	४९५	दट	५२५
तत	४३६	त्रत	४६६	थत	४९६	दत	५२६
तप	४३७	त्रप	४६७	थप	४९७	दप	५२७
तय	४३८	त्रय	४६८	थय	४९८	दय	५२८
तश	४३९	त्रश	४६९	थश	४९९	दश	५२९
ता	४४०	त्रा	४७०	था	५००	दा	५३०
ति	४४१	त्रि	४७१	थि	५०१	दि	५३१
ती	४४२	त्री	४७२	थी	५०२	दी	५३२
तु	४४३	त्रु	४७३	थु	५०३	दु	५३३
तू	४४४	त्रु	४७४	थू	५०४	दू	५३४
तृ	४४५	त्रृ	४७५	थृ	५०५	दृ	५३५
ते	४४६	त्रे	४७६	थे	५०६	दे	५३६
तै	४४७	त्रै	४७७	थै	५०७	दै	५३७
तो	४४८	त्रो	४७८	थो	५०८	दो	५३८
तौ	४४९	त्रौ	४७९	थौ	५०९	दौ	५३९
त्क	४५०	त्र्	४८०	थ्क	५१०	द्क	५४०
त्च	४५१	त्ल	४८१	थ्च	५११	द्च	५४१
त्ट	४५२	त्व	४८२	थ्ट	५१२	द्ट	५४२
त्त	४५३	त्वर	४८३	थ्त	५१३	द्त	५४३
त्थ	४५४	त्वा	४८४	थ्प	५१४	द्प	५४४
त्द	४५५	त्वे	४८५	थ्य	५१५	द्य	५४५
त्न	४५६	त्श	४८६	थ्र	५१६	द्र	५४६
त्प	४५७	त्ष	४८७	थ्ल	५१७	द्ल	५४७
त्फ	४५८	त्स	४८८	थ्श	५१८	द्श	५४८
त्य	४५९	त्ह	४८९	थ्स	५१९	द्स	५४९

ध		न		प		फ	
धं	५५०	नं	५८०	पं	६१०	फं	६४०
ध	५५१	न	५८१	प	६११	फ	६४१
धअ	५५२	नअ	५८२	पअ	६१२	फअ	६४२
धक	५५३	नक	५८३	पक	६१३	फक	६४३
धच	५५४	नच	५८४	पच	६१४	फच	६४४
धट	५५५	नट	५८५	पट	६१५	फट	६४५
धत	५५६	नत	५८६	पत	६१६	फत	६४६
धप	५५७	नप	५८७	पप	६१७	फप	६४७
धय	५५८	नय	५८८	पय	६१८	फय	६४८
धश	५५९	नश	५८९	पश	६१९	फश	६४९
धा	५६०	ना	५९०	पा	६२०	फा	६५०
धि	५६१	नि	५९१	पि	६२१	फि	६५१
धी	५६२	नी	५९२	पी	६२२	फी	६५२
धु	५६३	नु	५९३	पु	६२३	फु	६५३
धू	५६४	नू	५९४	पू	६२४	फू	६५४
धृ	५६५	नृ	५९५	पृ	६२५	फृ	६५५
धे	५६६	ने	५९६	पे	६२६	फे	६५६
धै	५६७	नै	५९७	पै	६२७	फै	६५७
धो	५६८	नो	५९८	पो	६२८	फो	६५८
धौ	५६९	नौ	५९९	पौ	६२९	फौ	६५९
ध्क	५७०	न्क	६००	प्क	६३०	फ्क	६६०
ध्च	५७१	न्च	६०१	प्च	६३१	फ्च	६६१
ध्ट	५७२	न्ट	६०२	प्ट	६३२	फ्ट	६६२
ध्त	५७३	न्त	६०३	प्त	६३३	फ्त	६६३
ध्प	५७४	न्प	६०४	प्प	६३४	फ्प	६६४
ध्य	५७५	न्य	६०५	प्य	६३५	फ्य	६६५
ध्र	५७६	न्र	६०६	प्र	६३६	फ्र	६६६
ध्ल	५७७	न्ल	६०७	प्ल	६३७	फ्ल	६६७
ध्श	५७८	न्श	६०८	प्श	६३८	फ्श	६६८
ध्स	५७९	न्स	६०९	प्स	६३९	फ्स	६६९

ब		भ		म		य	
बं	६७०	भं	७००	मं	७३०	यं	७६०
ब	६७१	भ	७०१	म	७३१	य	७६१
बअ	६७२	भअ	७०२	मअ	७३२	यअ	७६२
बक	६७३	भक	७०३	मक	७३३	यक	७६३
बच	६७४	भच	७०४	मच	७३४	यच	७६४
बट	६७५	भट	७०५	मट	७३५	यट	७६५
बत	६७६	भत	७०६	मत	७३६	यत	७६६
बप	६७७	भप	७०७	मय	७३७	यप	७६७
बय	६७८	भय	७०८	मय	७३८	यय	७६८
बश	६७९	भश	७०९	मश	७३९	यश	७६९
बा	६८०	भा	७१०	मा	७४०	या	७७०
बि	६८१	भि	७११	मि	७४१	थि	७७१
बी	६८२	भी	७१२	मी	७४२	यी	७७२
बु	६८३	भु	७१३	मु	७४३	यु	७७३
बू	६८४	भू	७१४	मू	७४४	यू	७७४
बृ	६८५	भृ	७१५	मृ	७४५	यृ	७७५
बे	६८६	भे	७१६	मे	७४६	ये	७७६
बै	६८७	भै	७१७	मै	७४७	यै	७७७
बो	६८८	भो	७१८	मो	७४८	यो	७७८
बौ	६८९	भौ	७१९	मौ	७४९	यौ	७७९
ब्क	६९०	भ्क	७२०	म्क	७५०	य्क	७८०
ब्च	६९१	भ्च	७२१	म्च	७५१	य्च	७८१
ब्ट	६९२	भ्ट	७२२	म्ट	७५२	य्ट	७८२
ब्त	६९३	भ्त	७२३	म्त	७५३	य्त	७८३
ब्प	६९४	भ्प	७२४	म्प	७५४	य्प	७८४
ब्य	६९५	भ्य	७२५	म्य	७५५	य्य	७८५
ब्र	६९६	भ्र	७२६	म्र	७५६	य्र	७८६
ब्ल	६९७	भ्ल	७२७	म्ल	७५७	य्ल	७८७
ब्श	६९८	भ्श	७२८	म्श	७५८	य्श	७८८
ब्स	६९९	भ्स	७२९	म्स	७५९	य्स	७८९

र		ल		व		श	
रं	७९०	लं	८२०	वं	८५०	शं	८८०
र	७९१	ल	८२१	व	८५१	श	८८१
रअ	७९२	लअ	८२२	वअ	८५२	शअ	८८२
रक	७९३	लक	८२३	वक	८५३	शक	८८३
रच	७९४	लच	८२४	वच	८५४	शच	८८४
रट	७९५	लट	८२५	वट	८५५	शट	८८५
रत	७९६	लत	८२६	वत	८५६	शत	८८६
रप	७९७	लप	८२७	वप	८५७	शप	८८७
रय	७९८	लय	८२८	वय	८५८	शय	८८८
रश	७९९	लश	८२९	वश	८५९	शश	८८९
रा	८००	ला	८३०	वा	८६०	शा	८९०
रि	८०१	लि	८३१	वि	८६१	शि	८९१
री	८०२	ली	८३२	वी	८६२	शी	८९२
रु	८०३	लु	८३३	वु	८६३	शु	८९३
रू	८०४	लू	८३४	वू	८६४	शू	८९४
—	८०५	—	८३५	वृ	८६५	शृ	८९५
रे	८०६	ले	८३६	वे	८६६	शे	८९६
रै	८०७	लै	८३७	वै	८६७	शै	८९७
रो	८०८	लो	८३८	वो	८६८	शो	८९८
रौ	८०९	लौ	८३९	वौ	८६९	शौ	८९९
र्क	८१०	ल्क	८४०	व्क	८७०	श्क	९००
र्च	८११	ल्च	८४१	व्च	८७१	श्च	९०१
र्ट	८१२	ल्ट	८४२	व्ट	८७२	श्ट	९०२
र्त	८१३	ल्त	८४३	व्त	८७३	श्त	९०३
र्प	८१४	ल्प	८४४	व्प	८७४	श्प	९०४
र्य	८१५	ल्य	८४५	व्य	८७५	श्य	९०५
र्र	८१६	ल्र	८४६	व्र	८७६	श्र	९०६
र्ल	८१७	ल्ल	८४७	व्ल	८७७	श्ल	९०७
र्श	८१८	ल्श	८४८	व्श	८७८	श्श	९०८
र्स	८१९	ल्स	८४९	व्स	८७९	श्स	९०९

ष		स		ह	
षं	९१०	सं	९४०	हं	९७०
ष	९११	स	९४१	ह	९७१
षअ	९१२	सअ	९४२	हअ	९७२
षक	९१३	सक	९४३	हक	९७३
षच	९१४	सच	९४४	हच	९७४
षट	९१५	सट	९४५	हट	९७५
षत	९१६	सत	९४६	हत	९७६
षप	९१७	सप	९४७	हप	९७७
षय	९१८	सय	९४८	हय	९७८
षश	९१९	सश	९४९	हश	९७९
षा	९२०	सा	९५०	हा	९८०
षि	९२१	सि	९५१	हि	९८१
षी	९२२	सी	९५२	ही	९८२
षु	९२३	सु	९५३	हु	९८३
षू	९२४	सू	९५४	हू	९८४
षृ	९२५	सृ	९५५	हृ	९८५
षे	९२६	से	९५६	हे	९८६
षै	९२७	सै	९५७	है	९८७
षो	९२८	सो	९५८	हो	९८८
षौ	९२९	सौ	९५९	हौ	९८९
ष्क	९३०	स्क	९६०	ह्क	९९०
ष्च	९३१	स्च	९६१	ह्च	९९१
ष्ट	९३२	स्ट	९६२	ह्ट	९९२
ष्त	९३३	स्त	९६३	ह्त	९९३
ष्प	९३४	स्प	९६४	ह्प	९९४
ष्य	९३५	स्य	९६५	ह्य	९९५
ष्र	९३६	स्र	९६६	ह्र	९९६
ष्ल	९३७	स्ल	९६७	ह्ल	९९७
ष्श	९३८	स्श	९६८	ह्श	९९८
ष्स	९३९	स्स	९६९	ह्स	९९९




साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड
इलाहाबाद